'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2019-20-21
WPP Licence No.- U(C)-101/2019-2021
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.05.2019
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रकाशक : डॉ. उदित राज, चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 011-23354841-42

Website : www.aiparisangh.com **E-mail: parisangh1997@gmail.com**

● वर्ष : 22 ● अंक 10 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 1 से 15 मई, 2019

भारतीय जनता पार्टी को जानें

डॉ. उदित राज

मैंने भारतीय जनता पार्टी स्वयं के स्वार्थ के लिए नहीं छोड़ा। उनके विश्वासघात ने मुझे भारतीय जनता पार्टी छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने के लिए मजबूर किया। पहली बार सांसद बनने के बावजूद मैंने उत्कृष्ट कार्य किया। इंडिया टुडे ग्रुप ने अपने सर्वे में मुझे पूरे देश में द्वितीय श्रेष्ठ सांसद पाया। इससे पहले फेम इंडिया एवं एशिया पोस्ट द्वारा किए गए सर्वे के आधार पर मेरे द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों एवं क्षेत्र की जनता से जुड़ने के मामले में मुझे एक बार श्रेष्ठ सांसद एवं दूसरी बार बेजोड़ सांसद आवार्ड से सम्मानित किया गया। यही नहीं भाजपा के आंतरिक सर्वे में भी मुझे लोकप्रिय एवं जीतने वाला सांसद पाया गया। भाजपा द्वारा टिकट देने के लिए 4-5 बार गुप्त रूप से आंतरिक सर्वे कराया जाता है और परिणामों की जांच की जाती है, पहले अलग-अलग और फिर मिलाकर। यदि विभिन्न एजेंसियों के सर्वे अलग-अलग आते हैं तो पुनः सर्वे कराया जाता है। सभी पैमानों पर खरा उतरने के बावजूद मुझे टिकट नहीं दिया गया। वे मेरे प्रति इतने पूर्वाग्रहित थे कि उन्हें अपनी एक सीट हारना मंजूर था लेकिन मैं किसी भी तरह संसद न पहुंच पाऊं इसके लिए पूरी साजिश किया। उन्होंने दिल्ली के प्रत्याशियों की घोषणा में 15-20 दिनों की देरी किया ताकि मेरा टिकट कटने की स्थिति में किसी अन्य पार्टी से टिकट का प्रयास करने का समय न बचे। उत्तर पश्चिम दिल्ली लोक सभा क्षेत्र के प्रत्याशी की औपचारिक घोषणा नामांकन की अंतिम तिथि 23 अप्रैल, 2019 को 1:30 से 2:00 बजे के बीच की गयी। क्या मैं इतना महत्त्वपूर्ण हूं या मैं उन्हें हानि पहुंचाने की ऐसी स्थिति में हूं कि मुझे रोकने के लिए उन्होंने इस प्रकार का अनैतिक कृत्य किया।

भाजपा के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष, श्री मनोज तिवारी ने मुझे तीन महीने पहले से आश्वासन दे रखा था कि मुझे ही उत्तर पश्चिम दिल्ली से प्रत्याशी बनाया जाएगा। 21 अप्रैल को जब दिल्ली के 7 में से 4 प्रत्याशियों की घोषणा हुई तो मैं चिंतित हुआ लेकिन फिर से मुझे आश्वासन दिया गया कि आगे 3 प्रत्याशियों के नामों की घोषणा में आपका नाम शामिल किया जा रहा है। मैंने प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री अमित शाह से फोन पर बात करने की कोशिश की लेकिन उन्होंने बात नहीं किया। उसके बाद पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं से जब बात किया तो उन्होंने भी मुझे अंधेरे में रखा। क्या यह साजिश नहीं थी? उन्हें मुझे साफ-साफ बता देना चाहिए था। मुझ पर आरोप लगाया जा सकता है कि मैं भाजपा में सिर्फ टिकट के लिए था, इससे मैं इनकार भी नहीं करता। आम चुनावों से ठीक पहले 23 फरवरी, 2014 को मैं भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुआ और मुझे उत्तर पश्चिम दिल्ली से टिकट दिया गया, क्यों? इसका कारण था कि पूरे देश के मेरे समर्थकों का वोट इन्हें चाहिए था। भाजपा में शामिल होने पर शुरूआती दिनों में 2014 के लोक सभा चुनाव के परिणामों तक भाजपा द्वारा मुझे अच्छी-खासी तवज्जो दी गयी थी और उसके बाद मुझे अलग-थलग कर दिया गया। उस समय दिल्ली भाजपा के एक बड़े दलित नेता जो अब नहीं रहे, ने कहा था कि मैं जो भी चाहूं भाजपा मेरे लिए करने को तैयार है। मेरी तुलना किसी भी सेलिब्रिटी से कम नहीं की जाती थी, उस समय की मीडिया कवरेज देखी जा सकती है, जब कहा गया कि भाजपा को पहली बार दलित चेहरा मिला। कोई भी कह सकता है कि मैं

भोला-भाला हूं और मीडिया सहित अन्य माध्यमों से आ रहे संकेतों की अनदेखी किया। मैं अपने साथ होने वाले विश्वासघात को भाप नहीं सका। इतिहास अपने आपको दोहराता है, यहां यह कहावत चरितार्थ हुई। तथाकथित हिंदुत्व वाली ताकते झूठ, धोखा, अंधविश्वास और रूढ़िवाद पर आधारित हैं। 4 महीने पहले श्री अरविंद केजरीवाल ने मुझे चेताया था कि भाजपा मुझे टिकट नहीं देने वाली है और यह बात अंततः सही साबित हुई। श्री राहुल गांधी ने भी संसद में मुझे 2-3 बार सलाह दिया कि मुझे भाजपा छोड़ देनी चाहिए।

यदि भाजपा मुझे टिकट देती तो मैं चुनाव अवश्य लड़ता। मैंने वैचारिक तौर पर कभी भी उनका समर्थन नहीं किया और मेरे शामिल होने के समय भी उन्हें यह बात पता थी। यह एक समझौता था कि हमारे समर्थक पूरे देश में वोट देकर भाजपा को जिताएंगें और यह पार्टी मुझे टिकट देगी। मैं संसद में भी मूकदर्शक नहीं बना। हमने संसद में अजा, जजा, पिछड़ों एवं महिलाओं की आवाज उठायी। मैं दुबारा भी यही सब करने वाला था। इतिहास याद रखेगा कि मैंने शोषितों के लिए कार्य किया। सबरीमाला मंदिर प्रवेश के बारे में मेरी राय भाजपा से बिल्कुल अलग थी। मैंने भाजपा छोड़ दी है, फिर भी मैं कोई अनैतिक बात नहीं कर सकता, इसलिए यहां नाम लेना उचित नहीं होगा कि भाजपा की एक उच्चस्तरीय सभा, जिसमें मैं भी आमंत्रित था, में पार्टी के वरिष्ठ नेता खुश हो रहे थे कि बाबरी मस्जिद की तरह ही दक्षिण भारत में उन्हें एक मुद्दा मिल गया है। वे समझते हैं कि दलित गूंगा और बहरा है। गत् वर्ष रामलीला मैदान में भाजपा द्वारा दलित भोज का आयोजन किया गया था, उन्होंने इसके लिए दलितों के घर से आनाज एकत्रित करके खिचड़ी बनाया था। उस समय भी मैंने टिप्पणी की थी कि दलित अब इतने बेवकूफ नहीं रहे कि वे इस तरह से प्रभावित होकर वोट देगें। हमने कहा था कि दलित अब शासन-प्रशासन एवं संसाधनों में भागीदारी चाहते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि 2 अप्रैल, 2018 को दलित अधिकारों के लिए आयोजित भारत बंद के लिए मैंने दलितों को उकसाया था। प्रधान मंत्री जी की उपस्थित में मैंने संसद में मुद्दा उठाया था कि किस प्रकार से उच्च न्यायपालिका व्यवस्था खराब कर रही है और सरकार कुछ नहीं कर रही है। दिल्ली में सीलिंग के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट की मोनिटरिंग कमेटी के विरूद्ध 3 दिसंबर, 2018 को रामलीला मैदान, दिल्ली में मैंने रैली आयोजित की थी लेकिन इसके लिए भी भाजपा द्वारा मुझे कोई सहयोग नहीं मिला था। इसका मतलब है कि वे जानबूझकर सीलिंग नहीं रुकवाना चाहते थे। मैंने अनुसूचित जाति, जन जाति एवं पिछड़ों को आरक्षण के लिए संसद में निजी बिल पेश किया है। वे इस तरह के मेरे कार्य को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं? जब मैं चुनाव जीतकर सांसद बना तो शुरुआत में ही नए सांसदों के लिए एक ट्रेनिंग कैंप आयोजित किया गया तो मैंने सवाल किया कि समरसता के स्थान पर भाजपा और आर.एस.एस. समतामूलक समाज के निर्माण के सिद्धांत को क्यों नहीं अपनाते? मैंने बार-बार सवाल किया कि नौकरियां घट रही हैं और लगातार सार्वजनिक उपक्रमों को क्यों बेचा जा रहा है? मैंने एअरपोर्ट अथारिटी ऑफ इंडिया के कर्मचारियों द्वारा 6 हवाई अड्डों के निजीकरण के विरोध में चल रहे धरना-प्रदर्शन में भाग लिया। दिल्ली यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन के बुलावे पर मैं प्रेस वार्ता एवं धरना में शामिल हुआ, जो अध्यापकों को ठेके पर रखे जाने और अन्य मांगों का विरोध कर रहे थे। दिल्ली यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन वामपंथी विचारधारा का समर्थन करती है। अन्य दलित सांसदों की तरह मैं कभी भी गूंगा और बहरा नहीं रहा।

भाजपा को दलित वोट तो चाहिए लेकिन दलित नेता नहीं चाहिए। दलित नेता वह होता है जो दलितों द्वारा बनाया गया होता है न कि भाजपा द्वारा। 20 मई, 2014 को श्री रामनाथ कोविंद जी मेरे पास अपना बायोडाटा लेकर आए और कहा कि मैं उनके लिए सिफारिश करूं। मैं उन्हें भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के पास ले गया और अब वे देश के राष्ट्रपति हैं। यदि मैं गूंगा और बहरा बना रहता तो वे मुझे भविष्य में कुछ भी बना सकते थे, प्रधानमंत्री भी।

✦✦✦

भाजपा वर्ग-शत्रु तो कांग्रेस वर्ग बहुजनों का मित्र है

-एच.एल.दुसाध

इस लेख को लिखे जाने के दौरान प्रथम चरण का चुनाव प्रचार खत्म हो चुका है। इस दरम्यान भाजपा के विरुद्ध चली हवा धीरे-धीरे आंधी का शक्ल लेने लगी है। देश के वंचित तबके, लेखक, कलाकार इत्यादि चुनाव के महापर्व को भाजपा-मुक्त भारत निर्माण के एक बड़े अवसर के रूप में लेते हुए केंद्र की भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने में सर्वशक्ति लगा रहे हैं। इस विषय में थियेटर और आर्ट से जुड़े नसीरुद्दीन शाह और अमोल पालेकर जैसी 600 हस्तियों द्वारा बीजेपी को सत्ता से उखड फेंकने की अपील अपील राष्ट्र को काफी प्रभावित कर रही है। इनसे पहले 200 लेखकों ने भी भाजपा सरकार को उखाड़ फेंकने की अपील की थी। लेखक, कलाकारों द्वारा किसी दल विशेष को सत्ता से बाहर करने की ऐसी पुरजोर कोशिश आजाद भारत में कभी नहीं हुई। बहरहाल एक ऐसे समय में जबकि लेखन, फिल्म, थियेटर इत्यादि से जुड़े लोग बीजेपी को सत्ता से बाहर करने के लिए सडकों पर उतर रहे हैं, अपील कर रहे है, वहाँ दलित पिछड़ों के कुछ बड़े राजनीतिक दल भाजपा और कांग्रेस से समान दूरी बरतते हुए कांग्रेस को बहुजनों का सबसे बड़ा दुश्मन प्रमाणित करने में एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं। वे इसके लिए बार-बार स्वाधीन भारत के 1952 के उस पहले लोकसभा चुनाव का हवाला दे रहे हैं, जब कांग्रेस ने दूध का छोटा-मोटा कारोबार करने वाले कजरोलकर नामक एक नौसिखिये नेता को चुनाव में उतारकर बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के हरा दिया था। इसमें कोई शक नहीं कि कांग्रेस का वह काम निंदनीय था, किन्तु 1952 से लेकर अबतक गंगा-जमुना में पानी बहुत बह चुका है : आज की कांग्रेस तब वाली कांग्रेस नहीं है। बहरहाल जो लोग 1952 का हवाला देकर आज कांग्रेस को बहुजनों का सबसे बड़ा शत्रु प्रमाणित करने का अभियान चला रहा हैं, उनके विषय में यही कहा जा सकता है कि उन्होंने इतिहास को ठीक से समझा ही नहीं है। खासकर इतिहास की सर्वोत्तम व्याख्या करने वाले कार्ल मार्क्स के नजरिये से इतिहास को देखा ही नहीं है। अगर देखते तो इस चुनाव में वे कोई और राग अलापते।

आरक्षण के खात्मे में सबसे ज्यादा मुस्तैद रहे संघी वाजपेयी और मोदी!

महान समाज विज्ञानी मार्क्स ने कहा है अब तक के विद्यमान समाजों का लिखित इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। एक वर्ग वह है जिसके पास उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व है अर्थात जिसका शक्ति के स्रोतों-आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक और धार्मिक? पर कब्जा है और दूसरा वह है, जो शारीरिक श्रम पर निर्भर है अर्थात शक्ति के स्रोतों से दूर व बहिष्कृत है। पहला वर्ग सदैव ही दूसरे का शोषण करता रहा है। मार्क्स के अनुसार समाज के शोषक और शोषित ये दो वर्ग सदा ही आपस में संघर्षरत रहे और इनमें कभी भी समझौता नहीं हो सकता। नागर समाज में विभिन्न व्यक्तियों और वर्गों के बीच होने वाली होड़ का विस्तार राज्य तक होता है। प्रभुत्वशाली वर्ग अपने हितों को पूरा करने और दूसरे वर्ग पर अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए राज्य का उपयोग करता है। ''जहां तक भारत में वर्ग संघर्ष का प्रश्न है, यह वर्ण-व्यवस्था रूपी आरक्षण - व्यवस्था में क्रियाशील रहा, जिसमें 7 अगस्त,1990 को मंडल की रिपोर्ट प्रकाशित होते ही एक नया मोड़ आ गया। क्योंकि इससे सदियों से शक्ति के स्रोतों पर एकाधिकार जमाये विशेषाधिकारयुक्त तबकों का वर्चस्व टूटने की स्थिति पैदा हो गयी। मंडल ने जहां सुविधाभोगी सवर्णों को सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत अवसरों से वंचित कर दिया, वही इससे दलित, आदिवासी। पिछड़ों की जाति चेतना का ऐसा लम्बवत विकास हुआ कि सवर्ण राजनीतिक रूप से लाचार समूह में तब्दील हो गए। कुल मिलकर मंडल से एक ऐसी स्थिति का उद्भव हुआ जिससे वंचित वर्गों की स्थिति अभूतपूर्व रूप से बेहतर होने की सम्भावना उजागर हो गयी और ऐसा होते ही सुविधाभोगी सवर्ण वर्ग के बुद्धिजीवी, मीडिया, साधु -संत, छात्र और उनके अभिभावक तथा राजनीतिक दल अपना कर्तव्य स्थिर कर लिए।

मंडल से त्रस्त सवर्ण समाज भाग्यवान था जो उसे जल्द ही 'नवउदारीकरण' का हथियार मिल गया, जिसे 24 जुलाई,1991 को नरसिंह राव ने सोत्साह वरण कर लिया। इसी नवउदारवादी अर्थिनीति को हथियार बनाकर नरसिंह राव ने मंडल उत्तरकाल में हजारों साल के सुविधाभोगी वर्ग के वर्चस्व को नए सिरे से स्थापित करने की बुनियाद रखी, जिस पर महल खड़ा करने की जिम्मेवारी परवर्तीकाल में अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी पर आई। नरसिंह राव के बाद सुविधाभोगी वर्ग को बेहतर हालात में ले जाने की जिम्मेवारी जिनपर आई, उनमे डॉ. मनमोहन सिंह अ-हिन्दू होने के कारण बहुजन वर्ग के प्रति कुछ सदय रहे, इसलिए उनके राज में उच्च शिक्षा में ओबीसी को आरक्षण मिलने के साथ बहुजनों को उद्यमिता के क्षेत्र में भी कुछ बढ़ावा मिला। किन्तु अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी हिन्दू होने के साथ उस संघ से प्रशिक्षित पीएम रहे, जिस संघ का एकमेव लक्ष्य ब्राह्मणों के नेतृत्व में सिर्फ सवर्णों का हित-पोषण रहा है। अतः संघ प्रशिक्षित इन दोनों प्रधानमंत्रियों ने सवर्ण वर्चस्व को स्थापित करने में देश-हित तक की बलि चढ़ा दी। इन दोनों ने आरक्षण पर निर्भर अपने वर्ग शत्रुओं (बहुजनों) के सफाए के लिए राज्य का भयावह इस्तेमाल किया। इस मामले में वाजपेयी ने नया रास्ता दिखायाः एकाधिक बार प्रधानमंत्री बनकर उन्होंने संघ के गुप्त एजेंडे को लागू करने के अपार तत्परता दिखाया। उन्होंने प्रधानमन्त्री की अपनी 13 दिवसीय पहली पाली में आनन-फानन में एनरान को काउंटर गारंटी दे दिया। संघ का गुप्त एजेंडा पूरा करके की जूनून में ही उन्होंने दो वर्ष का समय रहते हुए भी फटाफट 1429 वस्तुओं पर से मात्रात्मक प्रतिबंध हटा दिया। जिन सरकारी उपक्रमों में आरक्षण के जरिये बहुजनों को जॉब मिलता था, उन उपक्रमों को बेचने के लिए उन्होंने अरुण शौरी जैसे चरम अंबेडकर विरोधी की देखरेख में विनिवेश मंत्रालय ही खोल दिया और शौरी ने वाजपेयी की इच्छा का आदर करते हुए लाभजनक सरकारी उपक्रमों तक को औने-पौने दामों में अंधाधुन बेचने का सिलसिला शुरू किया। सामाजिक न्यायवादी सांसदों की संख्या बाहुल्यता के बावजूद देश को निजीकरण का सैलाब बहा देना, वाजपेयी की सबसे बड़ी कामयाबी रही। अब जहा तक नरेंद्र मोदी का सवाल है, उन्होंने अपने वर्ग शत्रुओं को तबाह करने के लिए जो गुल खिलाया, उसके फलस्वरूप आज बहुजन विशुद्ध गुलामों की स्थिति में पहुँच चुके हैं। कारण, जिस आरक्षण पर बहुजनों की उन्नति व प्रगति निर्भर है, मोदी राज में वह आरक्षण लगभग कागजों की शोभा बना दिया गया है। बहुजनों के विपरीत जिस जन्मजात सुविधाभोगी वर्ग (सवर्णों) के हित पर संघ परिवार की सारी गतिविधिया केन्द्रित रहती हैं, मोदी राज में उनका धर्म और ज्ञान - सत्ता के साथ राज और अर्थ - सत्ता पर 80-90 प्रतिशत कब्जा हो चुका है। शोषक और शोषितों के मध्य आज मोदी राज जैसे फर्क विश्व में और कहीं नहीं है।

वर्ग मित्र की भूमिका में कांग्रेस

बहरहाल यदि वर्ग संघर्ष के लिहाज से भाजपा की भूमिका घोर निंदनीय रही है, तो कांग्रेस भी कम नहीं रही रही, ऐसा तर्क खड़ा किया जा सकता है, जो गलत भी नहीं है। क्योंकि जिस आरक्षण पर बहुजनों की उन्नति-प्रगति निर्भर है, उसे खत्म करने में कांग्रेस ने नवउदारवादी अर्थनीति को हथियार बनाया। यह सत्य है कांग्रेस के नरसिंह राव ने ही 1991 में न सिर्फ नवउदारवादी अर्थनीति ग्रहण किया, बल्कि मनमोहन सिंह के साथ मिलकर बढाया भी। नवउदारवादी अर्थनीति के जनक डॉ.मनमोहन सिंह जब वाजपेयी के बाद खुद 2004 में सत्ता में आये तो नरसिंह राव द्वारा शुरू की गयी नीति को आगे बढाने में गुरेज नहीं किया। किन्तु उन्होंने कभी भी अटल बिहारी वाजपेयी या आज के मोदी की भांति इस हथियार का निर्ममता से इस्तेमाल नहीं किया वह बराबर इसे मानवीय चेहरा देने के लिए प्रयासरत रहे। उन्होंने अपने कार्यकाल में नवउदारवादी अर्थनीति से हुए विकास में दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यकों इत्यादि को वाजिब भागीदारी न मिलने को लेकर समय-समय पर चिंता ही जाहिर नहीं किया, बल्कि विकास में वंचितों को वाजिब शेयर मिले इसके लिए अर्थशास्त्रियों के समक्ष रचनात्मक सोच का परिचय देने की अपील तक किया। डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ही 2006 में उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रवेश में पिछड़ों को आरक्षण मिला, जिससे उच्च शिक्षा में उनके लिए सम्भावना के नए द्वार खुले, जिसे आज मोदी सरकार ने अदालतों का सहारा लेकर बंद करने में सर्व-शक्ति लगा दी। उच्च शिक्षा में पिछड़ों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के बाद ही डॉ. मनमोहन सिंह ने प्राइवेट सेक्टर में आरक्षण लागू करवाने का जो प्रयास किया वैसा, अन्य कोई न कर सका। उन्ही के कार्यकाल में मंनरेगा शुरू हुआ। यह निश्चय ही कोई क्रातिकारी कदम नहीं था, किन्तु इससे वंचित वर्गों को कुछ राहत जरुर मिली। मंनरेगा इस बात का सूचक था कि भारत के शासक वर्ग में वंचितों के प्रति मन के किसी कोने में करुणा है। चूँकि भारत का इतिहास आरक्षण पर संघर्ष का इतिहास है, इस लिहाज से यदि भाजपा से कांग्रेस की तुलना करें तो मात्रात्मक फर्क नजर आएगा। संघी वाजपेयी से लेकर नरेंद्र मोदी के कार्यकाल तक आरक्षण पर यदि कुछ हुआ है तो सिर्फ और सिर्फ इसका खात्मा हुआ है जोड़ा कुछ भी नहीं गया है। इस मामले में कांग्रेस चाहे तो गर्व कर कर सकती है। कांग्रेस के नेतृत्व में लड़े गए स्वाधीनता संग्राम के बाद जब देश आजाद हुआ तो उसके संविधान में आरक्षण का प्रावधान किया गया। इसी कांग्रेस की प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के कथित कुख्यात इमरजेंसी काल में एससी/एसटी के लिए मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढाई के प्रवेश में आरक्षण लागू हुआ। बाद में नवउदारवादी अर्थनीति के दौर मनमोहन सिंह के पहले दिग्विजय सिंह डाइवर्सिटी केन्द्रित भोपाल घोषणापत्र के जरिये सर्वव्यापी आरक्षण का एक ऐसा नया दरवाजा खोला जिसके कारण बहुजनों में नौकरियों से आगे बढ़कर सप्लाई, डीलरशिप, ठेकों इत्यादि समस्त क्षेत्रों में आरक्षण की चाह पनपी, जिसके क्रांतिकारी परिणाम आने के लक्षण अब दिखने लगे हैं। कुल मिलाकर मंडल उत्तरकाल में भाजपा से तुलना करने पर कांग्रेस की भूमिका बहुजनों के वर्ग मित्र के रूप में स्पष्ट नजर आती है। जिन्हें कांग्रेस के वर्ग मित्र की भूमिका में अवतरित होने पर संदेह है, वे एक बार लोकसभा चुनाव 2019 के लिए जारी कांग्रेस के घोषणापत्र और भाजपा के संकल्पपत्र से मिलान कर लें!

✦✦✦

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष :	600 रुपए
एक वर्ष :	150 रुपए

अम्बेडकर जयंती पर रैली एवं सभा संपन्न

म.प्र. राजपुर, भारत रत्न, संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की 128 वी जंयती के अवसर पर राजपुर नगर मे बैंड बाजे एवं डी.जे. पर थिरकते हुए नगर में रैली निकाली गई जिसका नगर के विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक संगठनों ने पुष्प वर्षा एवं पेयजल की व्यवस्था कर स्वागत किया गया। रैली तहसील कार्यालय परिसर में स्थित बाबा साहब की प्रतिमा से श्रीराम चौराहा बस स्टैंड त्रिवेणी मंदिर गुजरी चौक त्रिवेणी चौक हाथी गेट जुलवानिया रोड होते हुए पुनः कार्यक्रम स्थल तहसील कार्यालय परिसर में पहुंची, यहा बाबा साहेब की प्रतिमा पर आयोजन समिति के सदस्य गण एवं पधारे अतिथियों द्वारा माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

आयोजन समिति के सदस्य सचिन पटेल व संतोष भालके ने बताया कि सभा को बड़वानी से आए आशाराम सोलंकी ने संबोधित करते हुए कहा बाबा साहब राष्ट्र के प्रतीक-पुरुष व संविधान शिल्पी थे। जातिगत एवं अन्य पूवाग्रहों से मुक्त भारत के निर्माण के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। वे एक ऐसा समाज चाहते थे जहाँ महिलाओं व कमजोर वर्गो को समान अधिकार प्राप्त हों। आशाराम सोलंकी ने संबोधित करते हुए कहा, एक व्यक्ति-एक वोट और हर वोट का एक समान मूल्य का अमूल्य संवैधानिक अधिकार देकर बाबा साहेब ने सदियों से शोषित-पीडित दलितों, पिछड़ों व धार्मिक अल्पसंख्यकों आदि को अपना कल्याण स्वंय करने के लिए सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त करने का आह्वान किया, जिसे हमें पूरा करना है।

इन वक्ताओ ने किया संबोधित सभा को कु. अस्मिता गोरे, महेश भाबर मण्डवाड़ा, सुमेरसिंह बड़ोले, विजय गाठे, महेश रेवाल, पूर्व नपा अध्यक्ष रामकिशन गुप्ता, गुमान चौहान, विजय सोनगड़े, दिनेश चौहान, रितिक भार्गव, गजानंद मुजाल्दे आदि ने संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन सचिन पटेल ने किया। आभार अजाक्स के ब्लाक अध्यक्ष रमेशचन्द्र मुकेश ने माना।

इस दौरान किशोर भगौरे, कांतिलाल बमनका, राधेश्याम बघेल, महेश निंगवाल, श्रवण मुकेश, दिनेश चौहान, भागीरथ, कन्हैया अवासे, अनिल बड़ौले, अंकित मुकेश, जितेन्द्र, अर्जुन चौहान, उपेंद्र बडोले, अखिलेश पटेल, सूरज मुकाती, लखन पटेल, परमानंद मुजाल्दे, सुकलाल गोरे, विजय चौहान विनोद राठौड़, गोलू लोहारे, आनंद निगंवाल, हीरालाल मुजाल्दे, विजय गोरे,रवि चौहान, धिरेन्द्र शाक्ले आदि मौजुद थे।

– सचिन पटेल
मो. 9691515815

तानाशाह मोदी सरकार हटाओ लोकतंत्र बचाओ

2014 का लोकसभा चुनाव खत्म होते ही भारत देश का लोकतंत्र खतरे में आ गया! 2014 की नरेंद्र मोदी की सरकार मूल रूप से मनुवादी और पूंजीवादियों की सरकार रही है, जिसमें पहला मकसद था। देश बेचना दूसरा- मकसद था यहां के दलित आदिवासियों ओबीसी के अधिकार छीन कर उनको दुर्बल बनाया जाए।

मुस्लिम और ईसाइयों में हिंदुत्व की दहशत स्थापित की जाए। मोदी की सरकार ने सत्ता में आते ही बड़े-बड़े उद्योगपतियों व पूंजीपतियों के कर्जे माफ किए साथ ही गौ हत्या पाबंदी का कानून लाया गया, वैसे तो देश में गौ हत्या पाबंदी का कानून पहले से ही है। फिर भी यह कानून ला कर गौ रक्षकों को दलित एवं मुस्लिमों पर अत्याचार करने की खुली छूट और लाइसेंस वितरित करने का कार्य किया।

शिक्षा संस्थानों में दलित आदिवासी और ओबीसी छात्रों का मनोबल गिराने के लिए एबीवीपी जैसे संगठन को आर्थिक रूप से मजबूत करने का जोर शोर से काम किया गया इसी कारण हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी के शोधार्थी छात्र डॉ.अंबेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन के नेता रोहित वेमुला को एबीवीपी के छात्रों द्वारा मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया और उनके ऊपर झूठे आरोप लगाकर विश्वविद्यालय के वी.सी. और मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा उनको छात्रावास से निकाला गया उनके ऊपर देशद्रोही और समाजद्रोही जैसे आरोप लगाए गए। रोहित और उनके साथी लड़ते रहे और अंत में तानाशाही सरकार के सामने नकार के आत्महत्या कर ली। रोहित वेमुला के आत्महत्या का जिम्मेदार यह तानाशाही सरकार थी और यह चेतावनी थी कि महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में अंबेडकरवादी, परिवर्तनवादी विचारधारा को नकारा जाए। मगर रोहित के न्याय के लिए इस सरकार के खिलाफ बड़े पैमाने पर छात्र आंदोलन उभर कर आया, इसके बावजूद भी सरकार ने इस छात्र आंदोलन को नजर अंदाज किया! आज भी रोहित के कातिल जिंदा है हमें रोहित की शहादत को भूलना नहीं चाहिए यह शहादत नहीं यह नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा एक अंबेडकरवादी छात्र की हत्या है।

इन 5 सालों में सरकार ने गाय के नाम पर हजारों लोगों का कत्लेआम किया, गुजरात के ऊना में एक मरी हुई गाय की चमड़ी निकालने वाले 4 दलित युवाओं को बड़ी बेरहमी से पीटा गया और आज भी उनको न्याय नहीं मिला। इसी सरकार ने सबका साथ सबका विकास का नारा दिया मगर उन्होंने सिर्फ कट्टर हिंदूवादी लोगों का

ही विकास किया है और जिन्होंने इस विकास का विरोध किया उनकी हत्याएं की, जैसे- दाभोलकर, कलबुर्गी, पानसरै, पत्रकार गौरी लंकेश आदि की हत्याएं करवाई।

यह हत्या करके यह जताया गया की सरकार की नीतियों के विरोध में अगर कोई जाता है तो उसको मार दिया जाएगा। नरेंद्र मोदी सरकार के पैसे से पूरी दुनिया घूम आए वह भी खाली हाथ। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना मातृ संगठन मानते हैं मगर इस आर.एस.एस ने 70 सालों तक कभी तिरंगा झंडा फहराया नहीं। कैसे संगठन को अपना मात्र संगठन मानते हैं जिस संगठन को देश का राष्ट्रगान कबूल नहीं है उसी तरह इनकी भारत माता की तस्वीर में तिरंगा झंडा भी नहीं है। यह देशद्रोही विचारधारा के लोग हैं जो राष्ट्र के विकास की बात नहीं बल्कि यह राष्ट्र को बेचने की विचारधारा रखते हैं, इन्होंने बड़े पैमाने पर इन 5 सालों में निजीकरण करके सरकारी संपत्ति उद्योग पतियों को बेची है। इस सरकार में पूंजीपतियों द्वारा भारत की इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को खरीद लिया। आए दिन टीवी लगाते ही विभिन्न न्यूज चैनलों पर मोदी मोदी भोंकने की आवाजें आती है। जो मोदी कहेगा वहीं खबरें न्यूज चौनल वाले दिखाते हैं हम यह जानते हैं कि उनको भी पूंजी पतियों द्वारा मोदी सरकार ने खरीदा है और देश की आवाज को दबाया है।

जो छात्र युवा और साहित्य के लेखक इस सरकार के खिलाफ आवाज उठाता है वह धर्मादाय होता है देशद्रोही कहलाता है उनके ऊपर इसी तरह के मुकदमे दर्ज किए जाते हैं। गौ हत्या पर पाबंदी लगाकर इन्होंने खानपान के ऊपर पाबंदी लाई है तो वहीं दूसरी तरफ किसानों को दूध ना देने वाले लंगड़े वालो को मजबूरन पालना पड़ रहा है, इस कारण इन किसानों के ऊपर आर्थिक बोझ भी बड़ा है मोदी सरकार में दलित आदिवासी छात्रों को मिलने वाली राजीव गांधी नेशनल फेलोशिप बंद की गई है, उसी तरह केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शोधार्थी छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति भी बंद कर दी है। इनका पैसा वह गौशाला और मंदिरों में बांट रहे हैं। नोट बंदी करके देश के युवाओं को बेरोजगार किया साथ ही रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्वायत्तता भी खत्म करने का प्रयास इसी तानाशाही सरकार ने किया है। राफेल जैसा बड़ा घोटाला करके देश की सुरक्षा का पैसा अनिल अंबानी के जेब में डाला। आए दिन इन के सांसद और विधायक हिंदू राष्ट्रवाद स्थापित करने की बात करते हैं अभी तो इसी नरेंद्र मोदी ने आतंकवादी साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को भोपाल से चुनाव भी लड़ा रही है और खुद को राष्ट्रवादी कहते हैं इनका राष्ट्रवाद ना कि राष्ट्रवाद है यह देशद्रोही है। जिस साध्वी के बम ब्लास्ट में सैकड़ों लोगो ने जान गवांई। उस साध्वी को लोकसभा का टिकट देकर यह कौन सा राष्ट्रवाद दिखा रहे हैं या फिर अपनी दहशत स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। मोदी ने बीते 5 सालों में भारत की 121 करोड़ जनता को झूठ बोला, झूठे भाषण दिए देश की संपत्ति को निजी कंपनियों को बेचा और 2019 के चुनाव में भी लोगों को झूठे वादे करके, ईवीएम द्वारा फिर से चुनाव जीतकर इस देश का लोकतंत्र खत्म करने का पूरा प्रयास नरेन्द्र मोदी कर रहा है। अगर लोकतंत्र को बताना है तो हर हाल में मोदी को हमें हटाना होगा उसके सिवा यह लोकतंत्र नहीं बच पाएगा।

– डॉ. डी. हर्षवर्धन
राष्ट्रीय अध्यक्ष, नसोसवायएफ
मो. 7709975562

परिसंघ गुजरात की साबरकांठा जिलास्तरीय बैठक संपन्न हुई

इस जनरल मीटींग एवं सामाजिक चिंतनसभा में उत्पल कुलकर्णी, पियूष चमार, एड. कमल परमार, सतीष परमार,प्रशांत श्रीमाली और परिसंघ कार्यकत्ता उपस्थित रहे।

उत्पल कुलकर्णी परिसंघ के उद्देश्य और कार्यरीति के बारे में अपनी बात रखते हुए कहा कि अगर परिसंघ न होता तो दलितों की समस्याएं और भी बढ जाती उन्होने संबोधन में डॉ. उदित राज ने दलित उत्कर्ष मे क्या योगदान दिया है उसपर भी चर्चा की। परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज के जीवन और कथन के बारे में भी काफी जानकारी दी। विभिन्न सामाजिक मुद्दो के बारे में डॉ. उदित राज जी की क्या सोच है और देश में डॉ. उदित राज के रूप में दूसरे अम्बेडकर मिले है। हम सब को परिसंघ को जिले से लेकर राज्य तक मजबूती प्रदान

करनी होगी ऐसा जोर देकर उत्पल कुलकर्णी ने बताया। परिसंघ की उपलब्धिया भी गिनाई और सबका डॉ. उदित राज संसद में किन-किन मुद्दो का रखा उसका हैण्डबिल वितरित किया और साबरकांठा जिले के सभी तहसील के कार्यकर्त्ता मौजूद रहे। नरेन्द्र कुलकर्णी अध्यक्ष, साबरकांठा उन्होने काफी मेहनत करके लोगो को परिसंघ से जोड़ा और सामाजिक चिंतन सभा जनरल मीटींग का आयोजन किया।

नरेन्द्र कुलकर्णी भी अपने साथियों के साथ दिल्ली की रैली में भाग ले चुंके है। साबरकांठा जिले के सभी तहसील में पदाधिकारी की नियुक्ति की गई ओर परिसंघ को मजबूत बनाने की बात रखी। कोने-कोने तक परिसंघ को मजबूती देने के लिए विश्वास जगाना होगा।

अखिल भारतीय परिसंघ बनासकांठा जिला इकाई के तत्वाधान में सामान्य सभा पालनपुर में कलेक्टर कचहरी उधान में की गई

बनासकांठा जिलाध्यक्ष श्री उत्पल कुलकर्णी ने बनासकांठा के कई संगठन के पदाधिकारियों को बुलाया और सभी को एकजुट होने के लिए आवाहन किया। साथ ही परिसंघ की सभी कार्यशैली, उप्लाबधियाँ और कार्य को बखूबी से अवगत कराया। परिसंघ बनासकांठा द्वारा किये गए कार्यो को सभी को बताया। सभी संघठन को परिसंघ से क्यों जुड़ना चाहिए ये बात सबके सामने बखूबी से रखी और सभी उसपर सकारात्मक रवैया अपनाकर सहमति जताई। साथ ही साथ आजीवन सदस्यता अभियान में जुड़े।

सभी साथियों का शुक्रिया अदा किया।

इस सभा में श्री उत्पल कुलकर्णी, अध्यक्ष बनासकांठा, श्री जयेश बाग्दोडा, महामंत्री, श्री जयेश चौहाण, सहमंत्री, श्री दलपत भाटिया, अध्यक्ष, बनासकांठा दलित संघठन, श्री दीपक चौरसिया, दीपज्योती संस्था पालनपुर, श्री संजय सुनारिया, भारतीय वालंटियर फोर्स, श्री सुरेश परमार, श्री रसुंग चौहाण, जिनेन्द्र परमार, श्री विनोद सोलंकी, श्री कमलेश सोलंकी व आजीवन सदस्य परिसंघ बनासकांठा एवं प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने पूरा साथ दिया और आगे की रणनीति में साथ देने का वादा किया। सभी ने सुझाव दिया और दलित आन्दोलन को और तेज करने और निजी क्षेत्र में आरक्षण, न्यायपालिका में आरक्षण, ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति, आदि मुद्दे पर चर्चा हुई ।

✦✦✦

उत्तराखंड परिसंघ में कांग्रेस ज्वाइन करने से खुशी की लहर

डॉ. उदित राज ने हमेशा आरएसएस विचारधारा के खिलाफ आवाज उठायी और मनुवादियों का हमेशा विरोध किया और अम्बेडकरवाद को भारतीय समाज से स्थापित करने के अथक प्रयत्न किए और एससी/एसटी/ओबीसी एवं माइनॉरिटी समाज को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए अपनी क्लास-1 की केन्द्रीय सेवा से भी इस्तीफा देकर सामाजिक आंदोलन में कूद पड़े और 1997 में अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ बनाकर दलितों, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों को पूरे भारत में एकजुट किया लेकिन राजनैतिक मंच पाने के लिए ये ऐसी विचारधारा में शामिल हो गए, जिसको एससी/एसटी/ओबीसी एवं माइनॉरिटी कभी भी पसंद नहीं करता है और वह भाजपा जो आर.एस.एस. की विचारधारा पर चलती है, आर.एस.एस. की विचारधारा हमेशा अम्बेडकरवादी विचारधारा का विरोध करती आयी है। आपके भाजपा में शामिल होते ही एससी/एसटी के सदस्य परिसंघ से हटने लगे थे और नए सदस्य जुड़ने के लिए तैयार नहीं हो पा रहे थे।

सामाजिक और राजनैतिक सफर में आपने बौद्ध धर्म को बाबा साहेब के बाद पुनः जाग्रत किया। हम जानते हैं कि आपने भाजपा इस शर्त पर ज्वाइन किया था कि आप दलित हितों के कोई समझौता नहीं करेगें और दलितों की आवाज सड़क से संसद तक उठाते रहेगें। प्रत्येक वर्ष रैली करके आपने इसे साबित भी कर दिया। सदन में लगातार दलित मुद्दे सबसे ज्यादा उठाए। आपकी योग्यता के अनुसार ही आपको सर्वश्रेष्ठ सांसद का सम्मान भी मिला। हमारा मानना है कि भाजपा की अपेक्षा कांग्रेस पार्टी ने दलितों को उचित प्रतिनिधत्व प्रदान किया है और कर रही है। दलितों के उत्थान के लिए कांग्रेस सरकार ने हमेशा विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चलायी है और दलितों का उत्पीड़न रोकने के लिए अनुसूचित जाति/जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम बनाया। आरटीआई ऐक्ट बनाया, राइट टु एजुकेशन ऐक्ट बनाया। एससी/एसटी के बैकलॉग पद भरने के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाया। प्रारंभ से दलित वर्ग कांग्रेस का वोट बैंक माना जाता है, परंतु बीएसपी बनने से इनमें परिवर्तन हो गया है। परन्तु अंततः केन्द्र में बीएसपी हमेशा कांग्रेस का समर्थन करती आयी है। एससी/एसटी/ओबीसी और माइनॉरिटी वर्ग हमेशा से बीजेपी की विचारधारा (आरएसएस) को न पसंद करता आया है।

आरएसएस को न पसंद करता आया है। भाजपा हमेशा दलित, ओबीसी रिजर्वेशन का विरोध करती रही है। भाजपा के सांसद होते हुए भी आपने अपने संसदीय क्षेत्र में सांसद निधि से तमाम कल्याणकारी कार्य किए और आपकी उपलब्धियों को देखते हुए ही आपको उत्कृष्ट सांसद चुना गया और सम्मानित किया गया। इसके बावजूद भाजपा ने आपका टिकट काटकर अपनी मानसिकता साफ कर दिया है कि भाजपा को बुद्धिमान एवं दलित हितैषी नेता नहीं चाहिए। उत्तराखंड परिसंघ का मानना है कि आपने कांग्रेस पार्टी ज्वाइन करके सही समय पर सही कदम उठाया है और हमें उम्मीद है कि कांग्रेस आपकी योग्यता को पहचानकर उचित सम्मान एवं पद देगी। आपके इस कदम से एससी/एसटी, ओबीसी एवं माइनॉरिटी समाज में खुशी की लहर दोड़ पड़ी है और अब एस.सी./एस.टी./ओबीसी परिसंघ और अधिक मजबूत बनेगा और परिसंघ की सदस्यता बढ़ेगी। हम आपके मार्गदर्शन में काम करते रहेगें।

– इं. बाबू सिंह बौद्ध
प्रदेशाध्यक्ष, उत्तराखंड परिसंघ

✦✦✦

लाइट ऑफ एशिया लाइब्रेरी झाबर का पुरवा, जमुहाँ (दिबियापुर) औरैया मे उद्घाटन

साथियों, जय भीम नमोबुद्धाय आज दिनांक -12/5/2019 को लाइट ऑफ एशिया लाइब्रेरी झाबर का पुरवा, जमुहाँ(दिबियापुर)औरैया मे उद्घाटन करते हुए अनुसूचित जाति/जनजाति/अतिपिछड़ा वर्ग/अल्पसंख्यक संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के प्रदेश महासचिव नीरज कुमार चक, मंडल अध्यक्ष डॉ विशम्भर नाथ, मंडल उपाध्यक्ष जय प्रकाश भास्कर, वरिष्ठ शिक्षक पंकज प्रताप सिंह, अनिल कुमार सिंह, रामदास राय, पंचशीला, शैलेन्द्र प्रताप सिंह, शिवम कठेरिया आदि लोगों ने प्रतिभाग किया। उदघाटन के बाद बहुजन समाज के समस्त महापुरुषों का जीवन परिचय एवं भारतीय संविधान से सम्बंधित प्रश्नों पर आधरित प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, तथा प्रतियोगिता के बाद 252 बच्चों को स्टेशनरी भी वितरित की गयी।

कार्यक्रम संयोजक :- चन्द्रभान उर्फ धर्मा चौधरी एडवोकेट थे।

अलवर में दलित जोड़े के साथ हुई बर्बरता में दोषियों के विरुध कड़ी कार्यवाही के लिए डॉ. उदित राज जी ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा

Dr. Udit Raj (Ex. I.R.S.)

Member of Parliament
(Lok Sabha)
NORTH WEST DELHI

DO.UR/MP/2019/CON-014

8 मई 2019

प्रिय श्री अशोक गहलोत जी,

राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बनने एवं आप द्वारा मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही अनुसूचित जाति/जनजाति समाज में एक आत्मविश्वास जगा कि इस सरकार में इस पर हो रहे अत्याचारों पर राजस्थान में निश्चित ही लगाम लगेगी। हाल ही में अलवर में एक दलित जोड़े के खिलाफ हुई बर्बरता के बलात्कार की घटना की सोशल मीडिया के माध्यम से खबर फैलते ही आक्रोश का वातावरण बन गया है। इस घटना को याद कर दिल दहल जाता है।

आपसे निवेदन है कि अतिशीघ्र दोषियों को गिरफ्तार करके कड़ी कानूनी सजा दिए जाने हेतु सम्बंधित अधिकारीयों को आदेश दिए जाए। दोषियों को ऐसी सजा मिले कि इस तरह का अपराध दुबारा कोई करने की हिम्मत न कर सके।

सधन्यवाद

आपका
(डॉ उदित राज)

श्री अशोक गहलोत,
माननीय मुख्यमंत्री
राजस्थान सरकार
जयपुर

T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-1, India
Tel. : +91-11-23354841/42 Telefax : +91-11-23354843 Mob. : 9013869539, 9013869549
E-mail : dr.uditraj@gmail.com Web. : www.uditraj.com facebook.com/raj.udit

भारतीय जनता पार्टी द्वारा मेरा लोक सभा का टिकट काटा गया, क्योंकि मैं -

(1) पूरे देश में अन्य संसदों से अधिक कार्य किया -

अन्य सांसदों के मुकाबले सबसे ज्यादा विकास कार्य किया। पूरे देश में सबसे अधिक सांसद निधि खर्च करके क्षेत्र का विकास किया। पूरे देश में अन्य सांसदों के मुकाबले सबसे अधिक क्षेत्र की जनता से जुड़ा रहा। 1600 से अधिक जनता दरबार लगाया, 1812 बार क्षेत्र का दौरा किया, 22,360 पत्र लिखे, 4 लाख 17 हजार फोन जनसमस्याओं के निराकरण के लिए किया। इंडिया टुडे ग्रुप द्वारा पूरे देश के सांसदों पर किए गए सर्वे में मुझे द्वितीय श्रेष्ठ सांसद चुना गया। इसके पहले फेम इंडिया एवं इंडिया पोस्ट सर्वे द्वारा मुझे एक बार पूरे देश में श्रेष्ठ सांसद और दूसरी बार बेजोड़ सांसद अवार्ड मिला।

(2) गूंगा-बहरा नहीं बना -

मैं अन्य सांसदों की तरह भाजपा में रहते हुए भी गूंगा-बहरा नहीं रहा। मैंने अपने 5 साल के कार्यकाल में, 132 बार विभिन्न मुद्दों पर संसद में बोला, 350 तारांकित व अतारांकित सवाल पूछे, 25 निजी बिल पेश किया, 98 प्रतिशत संसद में मेरी उपस्थिति रही और लगातार सड़क से संसद तक संघर्ष करता रहा।

(3) संसद में दलित हितों के लिए आवाज उठाता रहा -

मैंने संसद में प्रधानमंत्री की उपस्थित में मुद्दा उठाया कि सुप्रीम कोर्ट दलित और पिछड़ा विरोधी है, वह कार्यपालिका के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप करते हुए कानून बनाने का कार्य करने लगी है। इसके अलावा आए दिन दलितों पर अत्याचार रोकने, भीम आर्मी के नेता, चन्द्रशेखर की रिहायी, जजों द्वारा जजों की नियुक्ति को रोकने, अजा/जजा एवं गरीब भूमिहीनों को दशकों पहले 20 सूत्रीय कार्यक्रम में आबंटित जमीन के मालिकाना हक, प्रमोशन में आरक्षण, निजी क्षेत्र में आरक्षण, जामिया मिलिया इसलामिया एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय में आरक्षण, एस.सी.पी./टी.एस.पी. में आबंटित धन को अन्यत्र खर्च पर रोक, 13 प्वाइंट रोस्टर आदि मुद्दे संसद में उठाये।

(4) दलित हितों के लिए अनेकों निजी बिल पेश किया -

अनुसूचित जाति/जन जाति वर्ग को निजी संस्थानों में आरक्षण, अजा/जजा एवं अन्य कमजोर तबके के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा एवं छात्रावास की सुविधा, एस.सी.पी/टी.एस.पी हेतु आबंटित बजट के दुरूपयोग को रोकने, हाथ से मैला उठाने पर पाबंदी, बेघरों को घर आदि सहित 25 निजी बिल संसद में पेश किया।

(5) 2 अप्रैल, 2018 को दलितों द्वारा भारत बंद का नेतृत्व किया -

2 अप्रैल, 2018 को जब पूरे देश में अनुसूचित जाति/जन जातियों द्वारा अजा/जजा अत्यचार निवारण अधिनियम को कमजोर करने और अन्य अधिकारों के लिए भारत बंद का आवाहन हुआ तो अपने संगठन अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ द्वारा पूरे देश में मैंने इसका नेतृत्व किया। सरकार के इशारे पर जगह-जगह अजा/जजा वर्ग के लोगों को फर्जी मुकदमों में फंसाकर जेल भेजा गया तो मैंने पूरे देश में इन्हें छुड़ाने का काम किया और संसद में भी इनके ऊपर लगे फर्जी मुकदमों को हटाकर इन्हें रिहा किए जाने की मांग की।

(6) प्रधानमंत्री के सामने अप्रैल, 2015 में भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक जो बंगलौर में आयोजित की गयी थी, में ईसाइयों को दुबारा जबरन हिन्दू बनाए जाने (घर वापिसी अभियान) का विरोध किया था।

(7) दिल्ली भाजपा द्वारा समरसता खिचड़ी का विरोध -

लोक सभा चुनावों से पहले दिल्ली भाजपा द्वारा रामलीला मैदान, दिल्ली में समरसता खिचड़ी का आयोजन किया गया था, जिससें दलितों के घरों से एक-एक मुट्ठी अनाज एकत्रित करके खिचड़ी भोज आयोजित किया गया था। इस पर मैंने कहा कि दलित अब इन ढकोसलों से प्रभावित होकर वोट नहीं देने वाले हैं, उन्हें भागीदारी चाहिए।

(8) अजा/जजा के अधिकारों के लिए लगातार रैलियां करता रहा-

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के माध्यम से प्रतिवर्ष अधिकारों के लिए केन्द्र सरकार की दलित विरोधी नीतियों के विरूद्ध रामलीला मैदान, दिल्ली में बड़ी-बड़ी रैलियां आयोजित करता रहा।

– डॉ. उदित राज

बुद्ध पूर्णिमा पर बुद्ध के दुश्मनों को पहचानिए

संजय जोठे

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बुद्ध के सबसे पुराने और सबसे शातिर दुश्मनों को आप आसानी से पहचान सकते हैं। यह दिन बहुत खास है इस दिन आँखें खोलकर चारों तरफ देखिये। बुद्ध की मूल शिक्षाओं को नष्ट करके उसमें आत्मा परमात्मा और पुनर्जन्म की बकवास भरने वाले बाबाओं को आप काम करता हुआ आसानी से देख सकेंगे। भारत में तो ऐसे त्यागियों, योगियों, रजिस्टर्ड भगवानों और स्वयं को बुद्ध का अवतार कहने वालों की कमी नहीं है। जैसे इन्होंने बुद्ध को उनके जीते जी बर्बाद करना चाहा था वैसे ही ढंग से आज तक ये पाखंडी बाबा लोग बुद्ध के पीछे लगे हुए हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन भारत के वेदांती बाबाओं सहित दलाई लामा जैसे स्वघोषित बुद्ध अवतारों को देखिये। ये विशुद्ध राजनेता हैं जो अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं को उल्टा सीधा तोड़ मरोड़कर उसमें आत्मा परमात्मा घुसेड देते हैं। भारत के एक फाइव स्टार रजिस्टर्ड भगवान् रजनीश ने तो दावा कर ही दिया था कि बुद्ध उनके शरीर में आकर रहे, इस दौरान उनके भक्तों ने प्रवचनों के दौरान उन्हें बुद्ध के नाम से ही संबोधित किया लेकिन ये ''परीक्षण'' काम नहीं किया और भगवान रजनीश ने खुद को बुद्ध से भी बड़ा बुद्ध घोषित करते हुए सब देख भालकर घोषणा की कि ''बुद्ध मेरे शरीर में भी आकर एक ही करवट सोना चाहते हैं, आते ही अपना भिक्षा पात्र मांग रहे हैं, दिन में एक ही बार नहाने की जिद करते हैं'' ओशो ने आगे कहा कि बुद्ध की इन सब बातों के कारण मेरे सर में दर्द हो गया और मैंने बुद्ध को कहा कि आप अब मेरे शरीर से निकल जाइए।

जरा गौर कीजिये। ये भगवान् रजनीश जैसे महागुरुओं का ढंग है बुद्ध से बात करने का। और कहीं नहीं तो कम से कम कल्पना और गप्प में ही वे बुद्ध का सम्मान कर लेते लेकिन वो भी इन धूर्त बाबाजी से न हो सका। आजकल ये बाबाजी और उनके फाइव स्टार शिष्य बुद्ध के अधिकृत व्याख्याता बने हुए हैं और बहुत ही चतुराई से बुद्ध की शिक्षाओं और भारत में बुद्ध के साकार होने की संभावनाओं को खत्म करने में लगे हैं। इसमें सबसे बड़ा दुर्भाग्य ये है कि दलित बहुजन समाज के और अंबेडकरवादी आन्दोलन के लोग भी इन जैसे बाबाओं से प्रभावित होकर अपने और इस देश के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं।

इस बात को गौर से समझना होगा कि भारतीय वेदांती बाबा किस तरह बुद्ध को और उनकी शिक्षाओं को नष्ट करते आये हैं। इसे ठीक से समझिये। बुद्ध की मूल शिक्षा अनात्मा की है। अर्थात कोई 'आत्मा नहीं होती'। जैसे अन्य धर्मों में ईश्वर, आत्मा और पुनर्जन्म होता है वैसे बुद्ध के धर्म में ईश्वर आत्मा और पुनर्जन्म का कोई स्थान नहीं है। बुद्ध के अनुसार हर व्यक्ति का शरीर और उसका मन मिलकर एक आभासी स्वं का निर्माण करता है जो अनेकों अनेक गुजर चुके शरीरों और मन के अवशेषों से और सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षणिक आदि कारकों के प्रभाव से बनता है, ये शुद्धतम भौतिकवादी निष्पत्ति है। किसी व्यक्ति में या जीव में कोई सनातन या अजर अमर आत्मा जैसी कोई चीज नहीं होती। और इसी कारण एक व्यक्ति का पुनर्जन्म होना एकदम असंभव है।

जो लोग पुनर्जन्म के दावे करते हैं वे बुद्ध से धोखा करते हैं। इस विषय में दलाई लामा का उदाहरण लिया जा सकता है। ये सज्जन कहते हैं कि वे

पहले दलाई लामा के तेरहवें या चौदहवें अवतार हैं और हर बार खोज लिए जाते हैं। अगर इनकी बात मानें तो इसका मतलब हुआ कि इनके पहले के दलाई लामाओं का सारा संचित ज्ञान, अनुभव और बोध बिना रुकावट के इनके पास आ रहा है। सनातन और अजर-अमर आत्मा के पुनर्जन्म का तकनीकी मतलब यही होता है कि अखंडित आत्मा अपने समस्त संस्कारों और प्रवृत्तियों के साथ अगले जन्म में जा रही है।

अब इस दावे की मूर्खता को ठीक से देखिये। ऐसे लामा और ऐसे दावेदार खुद को किसी अन्य का पुनर्जन्म बताते हैं लेकिन ये गजब की बात है कि इन्हें हर जन्म में शिक्षा दीक्षा और जिन्दगी की हर जरुरी बात को ए बी सी डी से शुरू करना पड़ता है। भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि ही नहीं बल्कि इनका अपना पालतू विषय अध्यात्म और ध्यान भी किसी नए शिक्षक से सीखना होता है। अगर इनका पुनर्जन्म का दावा सही है तो अपने ध्यान से ही इन चीजों को पिछले जन्म से 'री-कॉल' क्यों नहीं कर लेते? आपको भी स्पेशल ब्यूटर रखने होते हैं तो एक सामान्य आदमी में और इन अवतारों में क्या अंतर है?

इस बात को ठीक से देखिये। इससे साफ जाहिर होता है कि अवतार की घोषणा असल में एक राष्ट्राध्यक्ष के राजनीतिक पद को वैधता देने के लिए की जाती है। जैसे ही नया नेता खोजा जाता है उसे पहले वाले का अवतार बता दिया जाता है इससे असल में जनता में उस नेता या राजा के प्रति पैदा हो सकने वाले अविश्वास को खत्म कर दिया जाता है या उस नेता या राजा की क्षमता पर उठने वाले प्रश्न को भी खत्म कर दिया जाता है, जनता इस नये नेता को पुराने का पुनर्जन्म मानकर नतमस्तक होती रहती है और शिक्षा, रोजगार, विकास, न्याय आदि का प्रश्न नहीं उठाती, इसी मनोविज्ञान के सहारे ये गुरु सदियों सदियों तक गरीब जनता का खून चूसते हैं। यही भयानक राजनीति भारत में अवतारवाद के नाम पर हजारों साल से खेली जाती रही है। इसी कारण तिब्बत जैसा खूबसूरत मुल्क अन्धविश्वासी और परलोकवादी बाबाओं के चंगुल में फंसकर लगभग बर्बाद हो चुका है। वहां न शिक्षा है न रोजगार है न लोकतंत्र या आधुनिक समाज की कोई चेतना बच सकी है।

अब ये लामा महाशय तिब्बत को बर्बाद करके धूमकेतु की तरह भारत में घूम रहे हैं और अपनी बुद्ध विरोधी शिक्षाओं से भारत के बौद्ध आन्दोलन को पलीता लगाने का काम कर रहे हैं। भारत के बुद्ध प्रेमियों को ओशो रजनीश जैसे धूर्त वेदान्तियों और दलाई लामा जैसे अवसरवादी राजनेताओं से बचकर रहना होगा। डॉ. अंबेडकर ने हमें जिस जाए तो अंबेडकर जिस बुद्ध की खोज करके लाये हैं वही असली बुद्ध हैं। ये बुद्ध आत्मा और पुनर्जन्म को सिरे से नकारते हैं।

लेकिन भारतीय बाबा और फाइव स्टार भगवान लोग एकदम अलग ही खिचडी पकाते हैं। ये कहते हैं कि सब संतों की शिक्षा एक जैसी है, सबै सयाने एकमत और फिर उन सब सयानों के मुंह में वेदान्त ठूंस देते हैं। कहते हैं बुद्ध ने आत्मा और परमात्मा को जानते हुए भी इन्हें नकार दिया क्योंकि वे देख रहे थे कि आत्मा परमात्मा के नाम पर लोग अंधविश्वास में गिर सकते थे। यहाँ दो सवाल उठते हैं, पहला ये कि क्या बुद्ध ने स्वयं कहीं कहा है कि उन्होंने आत्मा परमात्मा को जानने के बाद भी उसे नकार दिया? दूसरा प्रश्न ये है कि बुद्ध अंधविश्वास को हटाने के लिए ऐसा कर रहे थे तो अन्धविश्वास का भय क्या उस समय की तुलना में आज एकदम खत्म हो गया है? दोनों सवालों का एक ही उत्तर है, ''नहीं''।

गौतम बुद्ध कुटिल राजनेता या वेदांती मदारी नहीं हैं। वे एक ईमानदार क्रांतिचेता और मनोवैज्ञानिक की तरह तथ्यों को उनके मूल रूप में रख रहे हैं। उनका अनात्मा का अपना विशिष्ट दर्शन और विश्लेषण है। उसमे वेदांती आ जाएगा कि बुद्ध आत्मा को नकारते हैं और कृष्ण आत्मा को सनातन बताते हैं, कृष्ण और बुद्ध दो विपरीत छोर हैं। लेकिन इतनी जाहिर सी बात को भी दबाकर ये बाबा लोग अपनी दुकान कैसे चला लेते हैं? लोग इनके झांसे में कैसे आ जाते हैं? यह बात गहराई से समझना चाहिए।

असल में ये धूर्त लोग भारतीय भीड़ की गरीबी, कमजोरी, संवादहीनता, कुंठा, अमानवीय शोषण, जातिवाद आदि से पीड़ित लोगों की सब तरह की मनोवैज्ञानिक असुरक्षाओं और मजबूरियों का फायदा उठाते हैं और तथाकथित ध्यान या समाधि या चमत्कारों के नाम पर मूर्ख बनाते हैं। इन बाबाओं की किताबें देखिये, आलौकिक शक्तियों के आश्वासन और अगले जन्म में इस जन्म के अमानवीय कष्ट से मुक्ति के आश्वासन भरे होते हैं। इनका मोक्ष असल में इस

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बुद्ध पूर्णिमा पर बुद्ध के दुश्मनों .....

(पृष्ठ 5 का शेष)

जमीन पर बनाये गये अमानवीय और नारकीय जीवन से मुक्त होने की वासना का साकार रूप है। इस काल्पनिक मोक्ष में हर गरीब शोषित इंसान ही नहीं बल्कि हराम का खा खाकर अजीर्ण, नपुंसकता और कब्ज से पीड़ित हो रहे राजा और सामंत भी घुस जाना चाहते हैं। आत्मा को सनातन बताकर गरीब को उसके आगामी जन्म की विभीषिका से डराते हैं और अमीर को ऐसे ही जन्म की दुबारा लालच देकर उसे फंसाते हैं, इस तरह इस मुल्क में एक शोषण का सनातन साम्राज्य बना रहता है। और शोषण का ये अमानवीय और इसे आप रोज बदलते हैं।

आप बचपन में स्कूल में जैसे थे आज यूनिवर्सिटी में या कालेज में या नौकरी करते हुए वैसे ही नहीं हैं, आपका स्व या आत्म या तथाकथित आत्मा रोज बदलती रही है। शरीर दो पांच दस साल में बदलता है लेकिन आत्मा या स्व तो हर पांच मिनट में बदलता है। इसी प्रतीति और अनुभव के आधार पर ध्यान की विधि खोजी गयी। बुद्ध ने कहा कि इतना तेजी से बदलता हुआ स्व जिसे हम अपना होना या आत्मा कहते हैं। इसी में सारी समस्या भरी हुयी है। इसीलिये वे इस स्व या आत्मा को ही निशाने पर लेते हैं। बुद्ध के अनुसार यह स्व या आत्मा एक कामचलाऊ धारणा है, ये आत्मा सिर्फ इस जीवन में लोगों से संबंधित होने और उनके साथ समाज में जीने का उपकरण भर है। इस स्व या आत्म की रचना करने वाले शरीर, कपड़े, भोजन, शिक्षा और सामाजिक धार्मिक प्रभावों को अगर अलग कर दिया जाए तो इसमें अपना आत्यंतिक कुछ भी नहीं है। यही अनात्मा का सिद्धांत है। यही आत्मज्ञान है। बुद्ध के अनुसार एक झूठे स्व या आत्म के झूठेपन को देख लेना ही आत्मज्ञान है। लेकिन वेदांती बाबाओं ने बड़ी होशियारी से बुद्ध के मुंह में वेदान्त ठूंस दिया है और इस झूठे अस्थाई स्व, आत्म या आत्मा को सनातन बताकर बुद्ध के आत्मज्ञान को 'सनातन आत्मा के ज्ञान' के रूप में प्रचारित कर रखा है। अगर आप इस गहराई में उतरकर इन बाबाओं और उनके अंधभक्तों से बात करें तो वे कहते हैं कि ये सब अनुभव का विषय है इसमें शब्दजाल मत रचिए। ये बड़ी गजब की बात है।

बुद्ध की सीधी सीधी शिक्षा को इन्होने न जाने कैसे कैसे श्ब्दजालों और ब्रह्मजालों से पाट दिया है और आदमी कन्फ्यूज होकर जब दिशाहीन हो जाता है तो ये उसे तन्त्र मन्त्र सिखाकर और भयानक कंडीशनिंग में धकेल देते हैं। इसकी पड़ताल करने के लिए इनकी गर्दन पकड़ने निकलें तो ये कहते हैं कि ये अनुभव का विषय है। इनसे फिर खोद खोद कर पूछिए कि आपको क्या अनुभव हुआ? तब ये जलेबियाँ बनाने लगते हैं। ये इनकी सनातन तकनीक है। असल में सनातन आत्मा सिखाने वाला कोई भी अनुशासन एक धर्म नहीं है बल्कि ये एक राजनीती है। इसी हथकंडे से ये सदियों से समाज में सृजनात्मक बातों को उलझाकर नष्ट करते आये हैं। भक्ति भाव और सामन्ती गुलामी के रूप में उन्होंने जो भक्तिप्रधान धर्मरचा है वो असल में भगवान और उसके प्रतिनिधि राजा को सुरक्षा देता आया है। यही बात है कि हस्ती मिटती नहीं इनकी, इस भक्ति में ही सारा जहर छुपा हुआ है। इसी से भारत में सब तरह के बदलाव रोके जाते हैं। और इतना ही नहीं व्यक्तिगत जीवन में अनात्मा के अभ्यास या ज्ञान से जो स्पष्टता और समाधि (बौद्ध समाधी)फलित हो सकती है वह भी असंभव बन जाती है। ये पाखंडी गुरु एक तरफ कहते हैं कि मैं और मेरे से मुक्त हो जाना ही ध्यान, समाधि और मोक्ष है और दूसरी तरफ इस मैं और मेरे के स्त्रोत इस सनातन आत्मा की घुट्टी भी पिलाए जायेंगे।

एक हाथ से जहर बेचेंगे दूसरे हाथ से दवाई। एक तरफ मोह माया को गाली देंगे और अगले पिछले जन्म के मोह को भी मजबूत करेंगे। एक तरह शरीर, मन और संस्कारों सहित आत्मा के अनंत जन्मों के कर्मो की बात सिखायेंगे और दूसरी तरफ अष्टावक्र की स्टाइल में ये भी कहेंगे कि तू मन नहीं शरीर नहीं आत्मा नहीं, तू खुद भी नहीं ये जान ले और अभी सुखी हो जा। ये खेल देखते हैं आप? ले देकर आत्मभाव से मुक्ति को लक्ष्य बतायेंगे और साथ में ये भी लिए घूमती है। अब ऐसे घनचक्कर में इन बाबाओं के सौ प्रतिशत लोग उलझे रहते हैं, ये भक्त अपने बुध्द भगवान् और इनके जैसे वेदांती बाबा इतनी सहजता से किसी को मुक्त नहीं होने देते। वे बुद्ध और निर्वाण के दर्शन को भी धार्मिक पाखंड की राजनीति का हथियार बना देते हैं और अपने भोग विलास का इन्तेजाम करते हुए करोड़ों लोगों का जीवन बर्बाद करते रहते हैं। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर इन बातों को गहराई से समझिये और दूसरों तक फैलाइये। एक बात ठीक से नोट कर लीजिये कि भारत में गरीबों, दलितों, मजदूरों, स्त्रियों और आदिवासियों के लिए बुद्ध का अनात्मा का और निरीश्वरवाद का दर्शन बहुत काम का साबित होने वाला है। बुद्ध का निरीश्वरवाद और अनात्मवाद असल में भारत के मौलिक और ऐतिहासिक भौतिकवाद से जन्मा है। ऐसे भौतिकवाद पर आज का पूरा विज्ञान खड़ा है और भविष्य में एक स्वस्थ, नैतिक और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण भी इसी भौतिकवाद की नींव पर होगा।

भाववादी या अध्यात्मवादी बकवास को जितनी जल्दी दफन किया जाएगा उतना ही इस देश का और इंसानियत का फायदा होगा। अब शेष समाज इसे समझे या न समझे, कम से कम भारत के दलितों, आदिवासियों, स्त्रियों और शूद्रों (ओबीसी) सहित सभी मुक्तिकामियों को इसे समझ लेना चाहिए। इसे समझिये और बुद्ध के मुंह से वेदान्त बुलवाने वाले बाबाओं और उनके शिष्यों के षड्यंत्रों को हर चौराहे पर नंगा कीजिये। इन बाबाओं के षड्यंत्रकारी सम्मोहन को कम करके मत आंकिये। ये बाबा ही असल में भारत में समाज और सरकार को बनाते बिगाड़ते आये हैं। अगर आंप ये बात अब भी नहीं समझते हैं तो आपके लिए और इस समाज के लिए कोई उम्मीद नहीं है। इसलिए आपसे निवेदन है कि बुद्ध को ठीक से समझिये और दूसरों को समझाइये।

(लेखक लीड इंडिया फेलो हैं। मूलतः मध्यप्रदेश के निवासी हैं। समाज कार्य में पिछले 15 वर्षो से सक्रिय हैं। ब्रिटेन की ससेक्स यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय विकास अध्ययन में परास्नातक हैं और वर्तमान में टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान से पीएचडी कर रहे हैं।)

✦✦✦

बिहार में डॉ. उदित राज जी का भव्य स्वागत

आज दिनांक 7 मई 2019 दिन मंगलवार को परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज प्रेस कांफ्रेंस करने तथा बिहार राज्य के परिसंघ के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से मिलने पटना आये। मई महीने की तमाम कठिनाईयों, सदस्यों की चुनाव ड्यूटी, रिश्तेदारी में शादी का मौसम, कार्यालयों में कार्य दिवस (मंगलवार) तथा भीषण गर्मी तापमान 43 डिग्री से ऊपर के बावजूद एवं सेकड़ों से ज्यादा की संख्या में सदस्य अपने प्रिय नेता की बात सुनने विभिन्न जिलों से पहुचे। परिसंघ सदस्यों के बीच अपने ओजस्वी भाषण में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि हमारे गठबंधन का कोई

पटना में डॉ. उदित राज जी का स्वागत करते हुए परिसंघ के नेतागण

लोक सभा उम्मीदवार जीते या हार जाये उसके ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता है, लेकिन इस बार अगर हार जायेगा तो फर्क पड़ेगा आपके आने वाली पीढ़ी तथा आपके बाल बच्चों के भविष्य पर तथा आपके मिले हुए अधिकार जो खत्म हो रहे है, आगे सब खत्म कर दिए जायेंगे। इसलिए आप जहाँ कहीं भाजपा के उम्मीदवार को मिल-जुलकर जरुर हराए। यही कहने, प्रेस वार्ता करने तथा पटना साहिब से लोक सभा उम्मीदवार श्री सत्रुघन सिन्हा के पक्ष में प्रचार करने में पटना आया हूँ। इस महत्वपूर्ण बैठक में जिला अध्यक्ष तथा परिसंघ के उपाध्यक्ष श्री शिवधर पासवान, जिला सचिव नालंदा श्री अनिल पासवान, प्रो डॉ. सदानंद पासवान, मधुबनी जिला अध्यक्ष बलराम पासवान जिला के सभी पदाधिकारीयों के साथ जिलाध्यक्ष सितामढ़ी श्री जगदीश दास, परिसंघ के सचिव कुमार धीरेन्द्र, श्री कृष्णा राय, एवं तार विभाग के प्रांतीय सचिव श्री राजेश कुमार, बिहार राज्य अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी संघ के उपाध्यक्ष श्री आशीष राय तथा नसोसवाईएफ के राष्ट्रीय महासचिव श्री अजय पासवान के बिहार राज्य की पूरी टीम तथा भोजपुर एवं लखीसराय के जिलाध्यक्ष राहुल कुमार अपनी टीम एवं तन-मन-धन के साथ अंत तक उपस्थित रहे।

– मदन राम
प्रदेश अध्यक्ष, बिहार

परिसंघ का राष्ट्रीय चिंतन शिविर 6 व 7 जूलाई को दिल्ली में

06 जूलाई और 07 जूलाई, 2019 को मावलंकर हॉल, कांस्टीट्यूशन क्लब, नजदीक पटेल चौक मेट्रो, नई दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय चिंतन शिविर आयोजित किया जा रहा है। इसमें पूरे देश के परिसंघ के पदाधिकारियों, सदस्यों कार्यकर्त्ताओ व शुभचिंतकों सहित बुध्दजीवियों को आमंत्रित किया जा रहा है। इस चिंतन शिविर में विचार किया जायेगा कि आरक्षण पर आए संकट से कैसे निपटा जाए। आरक्षण समाप्ति की ओर है तो निजी क्षेत्र में किस तरह से आरक्षण लागू कराया जाए। इसके अलावा दलितों पर आए दिन होने वाले भेदभाव व अत्याचार की समस्या से कैसे निपटा जाए, आदि मुख्य विषय हैं। इसलिए आप दो दिवसीय चिंतन शिविर में साथियों के साथ आएं और बैठकर चर्चा में भाग लें। कोई न कोई रास्ता तो निकालना पड़ेगा। हम महसूस करते है कि इस समय दलित व पिछड़ा समाज अंधकार में पड़ा है, और उसके अधिकारों पर कुठाराघात हो रहा है। जहां भी मैं जाता हूं सुनने को मिलता है कि आरक्षण खत्म हो रहा है, सिर्फ कागजों में रह गया है, वास्तव में समाप्त हो जायेगा, यदि अब भी समाज घर से बाहर निकल कर आन्दोलन नहीं करेगा तो ये भ्रांतियां हैं कि राजनीतिक सत्ता जब तक न मिले तब तक तो अधिकार नहीं मिल सकते। बाबा साहेब को कोई राजनीतिक सत्ता नहीं मिली थी फिर भी आरक्षण जैसे अधिकार सुनिश्चित कराए। गुर्जर जाट, पेटल और मराठा आदि ने भी सामाजिक आन्दोलन के जरिये आरक्षण लिया है, हम भी समाजिक आन्दोलन के जरिये पहले भी आरक्षण बचाए और आगे भी बचाते रहेंगे।

इस चिंतन शिविर में हॉल इत्यादि की बुकिंग, खाना की व्यवस्था आदि करने के लिए 500 रू. प्रति व्यक्ति सहयोग राशि के रूप में रखी गयी है। कृपया आने की अग्रिम सूचना राष्ट्रीय कार्यालय सचिव श्री सुमित मो. 9868978306 को दे।

डॉ. उदित राज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, परिसंघ

Birth Anniversary of Baba Sahib Ambedkar and Babu Parmanand Ji Celebrated at Jammu.

Jammu 28.04.2019: Today, at Bhartiya Dalit Satya Academy, Jammu, renowned & intellectual personalities participated in birth celebration of Bharat Ratna, Founder Father of Indian Constitution, Dr. B R Ambedkar and Former Governor of Haryana Babu Parmanand Ji.

Portrait of Baba Sahib and Babu ji is graced with flowers and speakers threw light on the life of both famous personalities of the country and called them as reformers of the society. Speaker highlighted that both the reformers were of very poor background having excellent record of education & choose social and political lines instead of govt job. Baba Sahib of his time having highest education in the country chose social & political life whereas Babu Parmanand was LLB of that time of J&K joined politics instead of govt job because majority of people amongst downtrodden communities liked to join govt job instead of social and political lines and choose Luxurious life,but both of these two personalities in their whole life worked for the downtrodden.

Paying tribute to Baba Sahib, State President Confederation R K Kalsotra apprised the gathering that in 1954 on Oct 27 while addressing the masses at Jalandhar, Baba Saheb Ambedkar said that when he came from England after getting his degree in Doctor of Philosophy, there was nobody in India with such qualification. He declined all tempting offers of Government jobs because he had a great feeling for the service of his community. He further said while in Congress Govt. he remained true to his people. His critics pointed out that he had joined the Congress. He explained that he stood like a rock which does not melt but turns the course of rivers. He apprised there were 30 S/C MPs. They never asked any question and never submitted a bill for consideration in the Parliament, giving impression to the outside world that the people have no problems and they do not require any special consideration. He also said, he has built the house for all of us. Now it is up to us to maintain it in proper order. He has planted the tree, if we water it we will enjoy the fruits and it's shade. If not, we will have to sit in the sun and our community will be ruined. On the other hand I have so many personal conversation with Babu Purmanand Ji in 1997 to 1999 when here in J&K we started Confederation work, he guided us many times to work to unite the people against the Govt and continuously raised the concerning issues of the society. Kalsotra said there is a slogans of bahujan "Vote hamra, Raaj Tumhara,Nahi chalega, Nahi chalega" because we are 85% against 15% who are ruling but we are not working on this slogans, I am witnessing those who are 15% are united one and merely in three Caste whereas those who are 85% are in divided into 6000 castes and their work is totally against each one. Kalsotra appealed to the community to come forth and strengthen the unity of Dalits, OBCs and Minorities to complete the unfinished work of Baba Saheb and Babu Ji to rule for the welfare of the people. He pointed out that right time is coming and if you wants to rule, then we should unite all.

Others who shared their views were Er Hem Raj Phonsa, Adv Ashok Basotra, Retd SP Hari Chand, Ajit Kumar, Retd Director Soba Ram, Retd Dy Commissioner,Ratan Lal Jangral, Retd Jt Director Rattan Bangotra, Retd Asstt Commissioner, Nagar Mal, Retd Town Planner S D Bhagat, Chairman Ambedker Group of Convent School Gian Chand Dogra, CE Gagan Jyoti, Retd Dir Rseti Mohinder Kumar, Retd Er Sham LAL Bassan, and many others. Stage worked staged by Dr Vijay Bhagat.

✦✦✦

Congratulation from DOM Parisangh, West Bengal Unit

West Bengal DOM PARISANGH congratulates Dr. Udit Raj for taking a marvelous decision to leave anti dalit political party BJP. The executive committee of DOMPARISANGH, West Bengal conveys sincere gratitude to Dr. Raj for taking such decision at right time. It's also our great pleasure to welcome Udit Sir's decision to join in the All India Congress Party. We are always with you sir.

We can't forget your movement against the anti Dalit activities by the so called elite class people at the national level. We will never forget your contribution for the welfare of the backward community. West Bengal DOM Parisangh appreciates the achievements and contribution of Dr. Udit Raj, ex IRS in the various fields during his journey for the last couple of years.

1. We are very proud that Dr. Udit Raj has been awarded the best speaker twice as an MP within the parliamentary constituency during the last five years tenure and participated with the maximum number of questions in the Parliament.

2. Dr. Udit Raj has raised the maximum number of issues related to SC, ST and OBC in comparison to other members particularly those MPs who belong to backward community.

3. Movement in favour of the compulsory assurance of reservation in private sector..

4. Fight for the Reservation against appointment in contractual, casual, part time, guest and similar nature of posts in both government and non government sector.

5. Only Dr. Udit Raj can take the step like Supreme Court Gherao movement.

6. Movement for 'Save Constitution and Save Reservation' across the States is one of the important contribution of the Chief Patron of DOM PARISANGH for Dalits.

The State Committee of DOM Parisangh,West Bengal has taken the following decision in its meeting:

a) Revised Districts Committees will be formed based on the present political scenario in West Bengal.

b) Petition should be placed to each level of government for implementing the Mandatory Punishment and Compensation under Atrocities Act.

c) Deputation should be organised in all districts headquarter for the Implementation and execution of all backward classes related schemes.

d) The State Committee unanimously and unconditionally supports the decision of Dr. Udit Raj and will always be there with Udit Sir.

✦✦✦

परिसंघ के सदस्य बनें और सोसल मीडिया से जुड़े

डॉ. उदित राज के नेतृत्व में चल रहे ऑल इंडिया परिसंघ की स्थापना 1997 में पांच आरक्षण विरोधी आदेशों की वापिसी के लिए हुआ और तब से लगातार संघर्ष करते हुए अनेको अधिकार सुरक्षित कराए। आगे भी संघर्ष जारी रहेगा। आप परिसंघ के सदस्य बनकर इस आंदोलन को सहयोग कर सकते हैं। सदस्य बनने के लिए www.aiparisangh.com पर लॉगिन करें। आप उपलब्धियों और गतिविधियों की लगातार जानकारी के लिए परिसंघ के सोसल मीडिया एकाउंट www.facebook.com/aiparisangh को लाइक करें। twitter.com/aiparisangh पर फालो करें। **Whatsapp No. : 9899766443** को अपने फोन में सेव करें और किसी भी जानकारी के लिए parisangh1997@gmail.com पर ईमेल करें।

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 22 ● Issue 10 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 1 to 15 May, 2019

Know the BJP

Dr. Udit Raj

I left BJP not for my own interest. Their betrayal forced me to quit the party and join the Congress. Being a first time Member of Parliament, my performance was outstanding. According to the India Today group survey, I was rated the 2nd Best Member of Parliament in the country. FAME India together with Asia Post bestowed upon me the accolades of Bejod Sansad (Unparalleled Member of Parliament) and Shrestha Sansad (Outstanding Performer). Not only this, in the internal survey of BJP, I was found most popular and a winner. The mechanism for ticket distribution is based upon 4 to 5 secret Internal survey agencies -result of each is examined, first separately and then jointly. If still there is a gap between different agencies and their own ground feedback, they quickly go for re-survey. I met all parameters and yet ticket was denied. They had hourbered so much venom against me that losing a seat is acceptable but assimilating me in the party isn't. They delayed the announcement of candidates in Delhi by 15 to 20 days, just to drag to the end so that I don't have time to seek ticket from other parties. Ticket for North-West Parliamentary Delhi was officially declared between 1:30 to 2:00 PM on the last day of nomination. Was I so important or carried such a damaging-inflicting capacity that they had to resort such an unethical practice?

The state president Manoj Tiwari assured me for three months that their is no alternative candidate. On 21st April, 2019 it became alarming when four candidates were announced- but again I was falsely promised that I'll be accommodated in remaining three unannounced candidates. I tried to reach the Prime Minister as well as BJP National President but there was no response. At the same time I tried to contact others who mattered and they kept me in dark. Isn't it a conspiracy? They could have told me clearly. The charge can be labelled against me that I was in the party for the ticket and yes, I do not refute. In 2014, I joined BJP on 23rd February and was given ticket, why? The reason was that I have a following across the country, which they needed. It reminds me of the initial days of my joining up till 2014 LS elections results- I was highly valued till the results. Post that I was dumped. A Dalit BJP leader of Delhi, who is no more, once said that whatever I want party will do. I was a sort of celebrity at first, one can refer to the news of those days, most of them said that for the first time the BJP had a Dalit face. One can say that I am naive that I ignored signals coming from other medium including the media. I could not see such a betrayal forthcoming. History repeated itself- that so called Hindutva forces operated and lies, treachery, superstition and fundamentalism. Four months back, Arvind Kejriwal warned me that the BJP will not give me the ticket and that eventually proved to be true. Rahul

Gandhi counselled me two to three times in the parliament, advising to leave the BJP.

Had they given me the ticket, I would have contested. I never supported them ideologically and at the time of my entry they knew it. It was a quid pro quo situation for both of us-in lieu of votes of my followers ,they will give me the ticket. I was not mute in the parliament. I raised the grievances of the underprivileged-be it women or SC/ST/OBC. Again I would have done the same thing. History will absolve me that I did it for exploited masses. On the issue of Sabrimala temple entry, I differed from the party line. I have left the party but I will still stick to some ethics so without taking names, I remember in one of the top meetings very senior people were invited including me, and there they were rejoicing that we have got a similar kind of agenda in South India likened to Babri Masjid. They think Dalits are dumb and deaf, last year Dalit Bhoj (Feast) was organised at Ramleela Ground, Delhi and what they did was to collect material from Dalits and prepare Khichdi out of that for them. I expressed my view that no longer Dalits are so innocent that they will vote for such tactics. At that time, I said that Dalit need share in governance and resources. They slapped charges on me that I instigated Bharat Bandh by Dalits on 2nd April, 2018. In the presence of Prime Minister, I raised the question that how higher judiciary is killing the system and the government is not doing anything? On the matter of sealing in Delhi, I had organised a huge rally on 3rd December, 2018 against the monitoring committee of Supreme Court but I did not get any support from the party. That means they wanted sealing to be continued. I moved a private member bill to seek reservation in private sector for SC/ST and OBC, how could they have tolerated this move? When I was elected, a training course was organised for new MPs and in the beginning itself, I raised the question-why BJP or RSS cannot adopt the concept of Samta Mulak Samaj instead of Samrasta. On number of occasions I had been raising the voice that jobs are being eroded and public sector undertakings are being sold deliberately. I participated in an agitation by employees of Airport Authority of India who were opposing the privatization of six Airports. On the call of Delhi University Teachers Association (DUTA), I participated in press conferences and agitations while they were agitating against the anti-people education. It is to be noted that DUTA is headed by the Left. Unlike other Dalit MPs, I never remained dumb and deaf.

BJP needs Dalit votes but not a Dalit leader. A Dalit leader is the one who is chosen by Dalits, not by them(BJP). On 20th May, 2014, Shri Ram Nath Kovind came to me with his bio data requesting me to do something for him. I took him to senior leaders. He reached to the position of President of India. If I had remained dumb and deaf, may be tomorrow they would have rewarded me with anything including Prime Ministership. This is just the tip of the iceberg for the BJP and RSS.

✦✦✦

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:

Five years	**:**	**Rs. 600/-**
One year	**:**	**Rs. 150/-**

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.

Website : www.uditraj.com **E-mail: parisangh1997@gmail.com** **Computer typesetting by Ganesh Yerekar**